ISSN 0975-217X Vol. No. 30, Issue No. 2, April-June, 2026

ताली वेब सीरीज में ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व और सामाजिक संवेदना : एक सामाजिक–सांस्कृतिक विश्लेषण

शालिनी अग्रवाल *

सारांश

पारंपरिक हिंदी सिनेमा में ट्रांसजेंडर पात्र प्रायः हास्य, डर, अंधविश्वास या नकारात्मक भूमिकाओं तक सीमित दिखाए जाते रहे हैं, जिससे समाज में उनके प्रति बनी रूढ़ियों को और बल मिलता है। वर्ष 2023 में जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम हुई वेब सीरीज 'ताली' इन सीमाओं को तोड़ते हुए ट्रांसजेंडर कार्यकर्ता गौरी सावंत के जीवन, संघर्ष और योगदान को सम्मान, संवेदना और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करती है। यह वेब सीरीज जेंडर पहचान, मातृत्व, राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक अधिकारों जैसे गंभीर विषयों को भावनात्मक गहराई के साथ सामने लाती है। शोध पद्धति के रूप में नैरेटिव, थीमेटिक और अभिनय–आधारित विश्लेषण अपनाया गया है ताकि कथानक, दृश्यांकन, संवाद और चरित्र–निर्माण के सामाजिक प्रभाव को समझा जा सके। यह वेब सीरीज भारतीय दर्शकों की सोच और ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति दृष्टिकोण को बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई है।

की वर्ड्स: ट्रांसजेंडर, ताली वेब सीरीज, मीडिया प्रतिनिधित्व, संवेदना, सामाजिक–सांस्कृतिक विश्लेषण, जेंडर आइडेंटिटी, LGBTQ+, अभिनय विश्लेषण, सुष्मिता सेन, जियो हॉटस्टार

परिचय

भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय का स्थान हमेशा से जटिल रहा है। सामाजिक परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक रूढ़ियों के बीच यह समुदाय लंबे समय तक उपेक्षा, भेदभाव और गलत धारणाओं का शिकार रहा है। मीडिया, खासकर हिंदी सिनेमा ने अक्सर ट्रांसजेंडर पात्रों को सतही, हास्य–प्रधान या भय उत्पन्न करने वाला दिखाया है, जिससे समाज में उनके प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण

* वरिष्ठ समाचार संपादक, राजस्थान पत्रिका एवं शोधार्थी, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर

विकसित नहीं हो पाया। ऐसे परिदृश्य में 'ताली' वेब सीरीज एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में सामने आती है। यह ट्रांसजेंडर सामाजिक कार्यकर्ता गौरी सावंत की वास्तविक कहानी पर आधारित है, जो न केवल ट्रांसजेंडर अधिकारों की आवाज बनीं, बल्कि कानूनी और सामाजिक आंदोलन का चेहरा भी रहीं।

'ताली – बजाऊंगी नहीं, बजवाऊंगी' वेब सीरीज एक बायोग्राफिकल ड्रामा है जो 15 अगस्त 2023 को जियो सिनेमा (अब जियो हॉटस्टार) पर स्ट्रीम हुई। यह हिंदी के अलावा तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़ आदि में भी उपलब्ध है। सीरीज में कुल 6 एपिसोड हैं और हर एपिसोड लगभग 28 33 मिनट का है। श्रीगौरी सावंत का किरदार जान-मानी एक्ट्रेस सुष्मिता सेन ने निभाया है, वहीं गौरी की मां की भूमिका में ऐश्वर्या नर्कर हैं। नंदू माधव, गौरी के पिता इंस्पेक्टर दिनकर सावंत बने हैं। गौरी के बचपन 'गणेश' का किरदार शान कक्कड़ ने निभाया है। सीरीज में 300 से ज्यादा ट्रांसजेंडर कलाकारों ने भी भूमिका निभाई है, जिससे इसे विशेष रूप से वास्तविकता के करीब बनाया गया है।

शोध पत्र के लिए इस वेब सीरीज को चुनने का एक विशिष्ट कारण यह है कि यह मात्र मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक डॉक्यूमेंटेशन का रूप लेती है। इसमें एक व्यक्ति के जीवन को दिखाने के साथ-साथ उस सामाजिक संरचना का भी विश्लेषण मिलता है जो ट्रांसजेंडर समुदाय को हाशिये पर पहुंचाने का कार्य करती है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि 'ताली' भारतीय मीडिया में ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व को किस हद तक बदलती है और यह प्रतिनिधित्व किस तरह दर्शकों में संवेदना तथा सम्मान का विकास करता है।

साहित्य समीक्षा

मीडिया और ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व पर पूर्व में अनेक अध्ययनों ने यह स्थापित किया है कि भारतीय सिनेमा और टीवी में हिजड़ा समुदाय का चित्रण प्रायः नाटकीय, हाशिये पर या हास्य के रूप में किया गया है।

अनुषा, डॉ. रश्मि राम हुनुर (A Review on Status of Transgenders from Social Exclusion to Social Inclusion in India, 2019): ट्रांसजेंडर समुदाय को मुख्यधारा में अक्सर स्टीरियोटाइप और कलंकित रूपों में दिखाया गया है। भारत में एक ट्रांसजेंडर के रूप में बड़ा होना अत्यंत कठिन है। हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, जहां मानवाधिकारों को सभी मनुष्यों के लिए सुनिश्चित और संरक्षित किया गया है, लेकिन तीसरे लिंग अर्थात ट्रांसजेंडर समुदाय को इससे वंचित रखा गया है।

गायत्री रेड्डी (With Respect to Sex: Negotiating Hijra Identity in South India, 2005): इनके अनुसार भारतीय सिनेमा और टीवी में हिजड़ा समुदाय का चित्रण प्रायः नाटकीय, हाशिये पर या हास्य के रूप में किया गया है।

मोहम्मद अल–मामुन, मोहम्मद जमाल हुसैन, मोहम्मद शाहीन परवेज आदि Discrimination and social exclusion of third-gender population (Hijra) in Bangladesh: A brief Review, 2022): इनके अनुसार ट्रांसजेंडर्स को नागरिक समाज के भीतर कोई स्थान नहीं दिया जाता, यहां तक कि मनोरंजन और वैवाहिक प्रथाओं के समय भी। सार्वजनिक स्थानों पर उनकी उपस्थिति से लोग अनुचित रूप से भयभीत रहते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है तथा उचित चिकित्सकीय और नागरिक सहायता से वंचित रखा जाता है।

गायत्री गोपीनाथ (Unruly Visions: The Aesthetic Practices of Queer Diaspora, 2018): इनके अनुसार ओटीटी प्लेटफॉर्म स्वतंत्र विषयों पर अधिक प्रयोगात्मक और यथार्थवादी सामग्री उपलब्ध कराते हैं। वे समाज में उपेक्षित और संवेदनशील विषयों को पेश करने के लिए नवोन्मेषी और स्वतंत्र मंच प्रदान कर रहे हैं।

हरलीन कौर, तुषार सिंह (A Qualitative Exploration of the role of intersectionality in health disparities faced by Indian transgender persons, 2024): इन्होंने अध्ययन में यह पाया कि ट्रांसजेंडर पात्रों का भावनात्मक और संवेदनशील चित्रण परिवार, समाज और राजनीति के विभिन्न आयामों को उजागर करने में सहायक होता है।

साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 'ताली' न केवल एक बायोग्राफिकल वेब सीरीज है, बल्कि यह ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए सकारात्मक मीडिया प्रतिनिधित्व, सामाजिक संवेदना और साक्षरता बढ़ाने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह पूर्व शोध और वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ के बीच पुल का काम करती है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म का महत्व

ओटीटी प्लेटफॉर्म आज के समय में मनोरंजन और जानकारी तक पहुंचने का एक जरूरी जरिया बन चुके हैं। इन प्लेटफॉर्म्स ने दर्शकों को यह सुविधा दी है कि वे किसी भी समय, किसी भी जगह अपनी पसंद का कंटेंट देख सकें। इससे दर्शकों का ध्यान नई प्रकार की कहानियों और विषयों की ओर बढ़ा है। इस बदलाव ने कंटेंट बनाने वालों को भी अधिक आजादी दी है, क्योंकि अब उन्हें तय समय स्लॉट या सेंसरशिप से जुड़ी कई सीमाओं का सामना कम करना पड़ता है।

इसके साथ ही, ओटीटी प्लेटफॉर्म ऐसे मुद्दों और पात्रों को सामने लाते हैं जिन्हें

पहले मुख्यधारा मनोरंजन में कम जगह मिलती थी या जिन पर बात करने से बचा जाता था। 'ताली' जैसी वेब सीरीज इसका उदाहरण है, जो जेंडर पहचान, सामाजिक स्वीकार्यता और ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकार जैसे विषयों को सीधे दर्शकों तक पहुंचाती है। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर बात करने से पारंपरिक मीडिया बचता रहा है। यही वजह है कि ओटीटी केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, नए विषयों और नई आवाजों को मंच देने का एक प्रभावी तरीका भी बन गया है।

शोध समस्या

इस शोध का मूल प्रश्न यह है कि भारतीय मीडिया में ट्रांसजेंडर समुदाय के पारंपरिक, सीमित और रूढ़िबद्ध प्रतिनिधित्व को 'ताली' वेब सीरीज किस हद तक चुनौती देती है और क्या यह सीरीज समाज में उनके प्रति सकारात्मक संवेदना एवं स्वीकार्यता को बढ़ाने में प्रभावी सिद्ध होती है। भारतीय मीडिया में लंबे समय से बनी छवियों के कारण समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय को लेकर बनी धारणाएं अक्सर गलत और अधूरी रहती हैं। अतः यह अध्ययन यह मूल्यांकन करता है कि क्या 'ताली' इस धारणा को बदलने में सक्षम है और क्या यह ट्रांसजेंडर व्यक्ति को एक संपूर्ण मानव के रूप में दिखाती है, न कि केवल एक सामाजिक समस्या या विचलन के रूप में।

शोध उद्देश्य

इस शोध के उद्देश्य विविध और परस्पर जुड़े हुए हैं।

- पहला उद्देश्य यह समझना है कि 'ताली' ट्रांसजेंडर पहचान को किस प्रकार प्रस्तुत करती है; क्या यह प्रस्तुति सम्मानजनक, प्रामाणिक और संवेदनशील है या यह पारंपरिक मीडिया प्रतिमानों को दोहराती है।
- दूसरा उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि सीरीज समाज के लैंगिक विमर्श, पहचान, अधिकारों और जेंडर राजनीति को किस रूप में प्रभावित करती है।
- तीसरा उद्देश्य अभिनय-आधारित विश्लेषण के माध्यम से पात्रों की विश्वसनीयता, भावनात्मक गहराई और प्रस्तुति की प्रभावशीलता का अध्ययन करना है।
- चौथा उद्देश्य यह जानना है कि मातृत्व, संघर्ष, सामाजिक अस्वीकृति और कानूनी लड़ाई जैसे विषयों को कथानक में किस तरह गूंथा गया है और इन विषयों का दर्शकों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

अंततः यह शोध यह भी प्रयास करता है कि 'ताली' को व्यापक मीडिया परंपरा में रखकर देखा जाए और आंका जाए कि यह प्रतिनिधित्व किस दिशा में सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करता है।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में गुणात्मक शोध पद्धति अपनाई गई है, जिसमें मुख्य रूप से नैरेटिव विश्लेषण, थीमेटिक विश्लेषण और अभिनय-आधारित व्याख्या शामिल हैं। नैरेटिव विश्लेषण का उद्देश्य कथा-संरचना, घटनाओं की क्रमबद्धता, संघर्षों के विकास और समाधान के तरीकों की जांच करना है। थीमेटिक विश्लेषण में उन व्यापक विषयों को समझा गया है जो पूरी वेब सीरीज में बार-बार उभरते हैं, जैसे पहचान, मातृत्व, राजनीतिक संघर्ष और समाज में स्वीकृति का प्रश्न अभिनय-आधारित विश्लेषण के अंतर्गत सुष्मिता सेन और अन्य अभिनेताओं के हावभाव, संवाद-अभिनय, प्रतीकात्मक संकेत, शरीर-भाषा और भावनात्मक प्रस्तुति का अध्ययन किया गया है। इस शोध में दृश्य-चिह्नों और रूपकों का भी विश्लेषण शामिल है, जैसे रंगों का प्रयोग, कैमरा एंगल और ऐसे दृश्य जो सामाजिक असमानताओं को सूक्ष्म रूप से उजागर करते हैं।

पहचान और आत्म संघर्ष

'ताली' ट्रांसजेंडर पहचान की जटिलताओं को गहराई से प्रस्तुत करती है। यह दिखाती है कि जेंडर केवल जैविक या शारीरिक संरचना का विषय नहीं है, बल्कि एक जीवंत अनुभव और आत्म-स्वीकृति की प्रक्रिया है। शृंखला में मुख्य पात्र अपने बचपन से ही महसूस करता है कि वह सामाजिक रूप से निर्धारित पुरुष पहचान में फिट नहीं बैठता। परिवार द्वारा अस्वीकृति और समाज द्वारा आशंका, उपहास व अपमान का सामना करते हुए भी वह अपनी पहचान को स्वीकारने और उसे जीने का साहस करता है। यह आत्म-संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक है, जो हजारों ट्रांसजेंडर्स के आंतरिक और सामाजिक संघर्ष को प्रतिबिंबित करता है।

राजनीतिक संघर्ष और कानूनी मान्यता

सीरीज में राजनीतिक संघर्ष को बेहद मानवीय और संवेदनशील रूप में दिखाया गया है। यह केवल न्यायालय की कार्यवाही नहीं, बल्कि उस भावनात्मक कीमत का चित्रण भी है, जिसे ट्रांसजेंडर समुदाय को पहचान पाने के लिए चुकाना पड़ा। NALSA के ऐतिहासिक निर्णय को कहानी में ऐसे स्थान दिया गया है कि दर्शक कानूनी जटिलताओं के साथ-साथ इसके मानवीय महत्व को भी समझ सकें। यह संघर्ष बताता है कि अधिकार मांगना मात्र कानून की भाषा में नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति और सम्मान की लड़ाई भी होती है।

मातृत्व की पुनर्परिभाषा

'ताली' में मातृत्व को जिस साहस और भावनात्मक गहराई से प्रस्तुत किया गया है, वह भारतीय मीडिया में दुर्लभ है। गौरी द्वारा एक बच्ची को गोद लेना समाज

को यह पुनः सोचने पर मजबूर करता है कि मातृत्व केवल जैविक नहीं, बल्कि संवेदनात्मक और सामाजिक प्रक्रिया है। इस विषय को जिस सहजता और सम्मान के साथ दिखाया गया है, वह दर्शकों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की मानवीय संवेदनाओं के प्रति नई समझ पैदा करता है।

अभिनय–आधारित विश्लेषण

सुष्मिता सेन का अभिनय इस सीरीज की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक है। उन्होंने गौरी सावंत के व्यक्तित्व को केवल रूप–रंग या मेकअप तक सीमित नहीं रखा, बल्कि आवाज, चाल–ढाल, शरीर–भाषा और चेहरे के भावों के माध्यम से इस पात्र को अत्यंत संवेदनशील बनाया। उनकी परफॉर्मेंस में कच्चापन और संजीदगी दोनों मौजूद हैं। वे पीड़ा को अत्यधिक नाटकीयता के बिना व्यक्त करती हैं और मातृत्व की अनुभूति को बहुत वास्तविक ढंग से दर्शाती हैं।

अन्य अभिनेता, जैसे मां का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री, पारिवारिक संघर्ष और स्वीकृति की यात्रा को प्रभावी रूप में सामने लाते हैं। समाज, पुलिस और राजनीति की भूमिकाओं को निभाने वाले कलाकार सत्ता, भय, भेदभाव और हिंसा की संरचना को विश्वसनीय तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय का सामाजिक चित्रण

इस वेब सीरीज का एक महत्वपूर्ण योगदान यह है कि यह ट्रांसजेंडर समुदाय को किसी दया के पात्र के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक ढांचे का सक्रिय हिस्सा मानती है। शिक्षा की कमी, रोजगार के अवसरों का अभाव, भेदभाव और मजबूरी में किए जाने वाले कार्यों का चित्रण किसी भी प्रकार की सनसनी या सतहीपन के बिना किया गया है। इससे दर्शक समझ पाते हैं कि ये समस्याएं व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और संरचनात्मक हैं, जिनका समाधान केवल सामाजिक सुधार और नीति–निर्माण से संभव है।

दिखाती नहीं, समझाती है

'ताली' का सबसे सकारात्मक पहलू यह है कि यह ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति उत्पन्न की जाने वाली सहानुभूति को सम्मान में बदलती है। यह समुदाय को दिखाती नहीं, बल्कि समझाती है। इसकी कथा दर्शकों को उस दुनिया से परिचित कराती है, जिसे अक्सर अनदेखा या गलत ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। सीरीज दर्शकों के भीतर सामाजिक मान्यताओं को लेकर प्रश्न खड़े करती है और सोचने पर मजबूर करती है कि अधिकारों और पहचान की लड़ाई किसी भी व्यक्ति का प्राथमिक मानवाधिकार है।

हालांकि, कुछ आलोचनाएं भी हैं। प्रमुख भूमिका के लिए किसी वास्तविक ट्रांसजेंडर कलाकार को न लेना प्रतिनिधित्व की प्रामाणिकता को कुछ हद तक सीमित कर देता है। कुछ दृश्य सिनेमाई प्रभाव के कारण अत्यधिक भावनात्मक प्रतीत होते हैं, जिससे यथार्थता में हल्की कमी महसूस होती है। इसके बावजूद, यह वेब सीरीज भारतीय दर्शकों को एक नई दृष्टि देने में सफल रही है।

शोध सीमाएं

इस शोध में कुछ सीमाएं भी मौजूद हैं। 'ताली' केवल एक व्यक्ति की यात्रा पर आधारित है, इसलिए यह संपूर्ण ट्रांसजेंडर समुदाय की विविधता और बहुआयामी अनुभवों को पूरी तरह समाहित नहीं कर सकती। शोध पूरी तरह टेक्स्टुअल और गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें फील्डवर्क या इंटरव्यू शामिल नहीं हैं, इसलिए निष्कर्ष कुछ हद तक मीडिया-टेक्स्ट पर अधिक निर्भर हैं। इसके अलावा, ओटीटी प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम होने के कारण यह वेब सीरीज मुख्यतः शहरी और डिजिटल दर्शकों तक पहुंचती है, जिससे ग्रामीण और उपेक्षित समुदायों पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव सीमित हो जाता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 'ताली' भारतीय मीडिया में ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध होती है। यह पारंपरिक स्टीरियोटाइप से दूर जाकर ट्रांसजेंडर पहचान को सम्मान, साहस और संवेदना के साथ प्रस्तुत करती है। सीरीज दर्शकों को यह समझाती है कि ट्रांसजेंडर्स केवल एक लैंगिक पहचान नहीं, बल्कि एक सोच, संघर्ष, भावना और सामाजिक भूमिका रखने वाला पूर्ण मनुष्य है। सुष्मिता सेन के अभिनय ने गौरी सावंत जैसे वास्तविक किरदार को एक जीवंत रूप दिया है, जिससे दर्शक उनकी पीड़ा, ताकत, मातृत्व और सक्रियता को महसूस कर पाते हैं। यह वेब सीरीज दर्शकों में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति नए प्रकार की संवेदनशीलता और स्वीकार्यता विकसित करती है।

❐❐